

पर्यटन विशेषांक



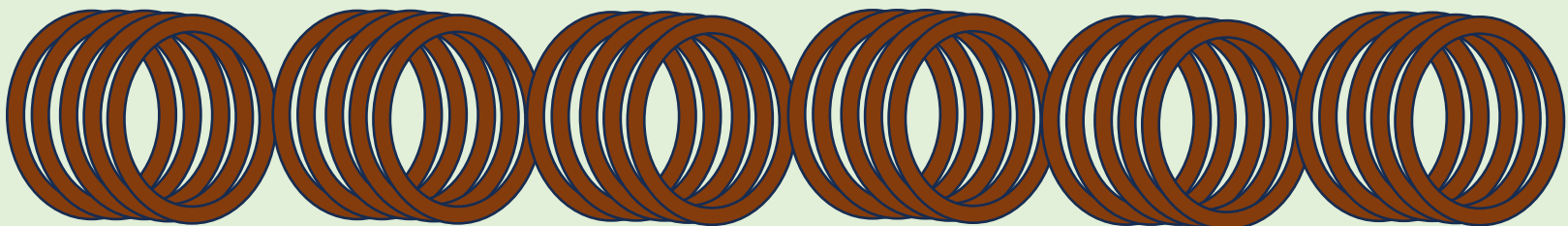
# अजंता दर्पण



दक्षिण मध्य रेलवे

नांदेड़ मंडल

त्रैमासिक ई-सूचना पत्र- मार्च 2025



## संरक्षक

श्रीमती नीति सरकार,  
मंडल रेल प्रबंधक

## मार्गदर्शक

श्री राजेंद्र कुमार मीणा,  
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी  
एवं  
अपर मंडल रेल प्रबंधक

## संपादक

श्री हेमंत वाडेकर,  
राजभाषा अधिकारी

## सहयोग

श्री मोहम्मद रफीउद्दीन,  
वरिष्ठ अनुवादक  
श्री मुकेश साव,  
कनिष्ठ अनुवादक

## संपादकीय संपर्क

राजभाषा अधिकारी,  
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय,  
सांगवी, हवाई अड्डे के पास,  
नांदेड - 431605

## डिजाईन

श्री मोहम्मद रफीउद्दीन,  
वरिष्ठ अनुवादक

संपादक के कलम से ...



प्रिय रेलकर्मियों,

आपका स्वागत है हमारे पर्यटन विशेषांक में! इस विशेषांक में, हम आपको नांदेड मंडल के विविध और मोहक पर्यटन स्थलों की रोमांचक यात्रा पर ले चलेंगे. भारत, विश्व का सातवां सबसे बड़ा देश होने के नाते, अपनी विविधता और समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर के लिए जाना जाता है. यहां के प्रत्येक स्थान की एक अनुपम कहानी, इतिहास, और प्राकृतिक सुंदरता छिपी है.

नांदेड मंडल द्वारा प्रकाशित अजंता दर्पण ई-पत्रिका के इस अंक को "पर्यटन विशेषांक" के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए सुखद अनुभव हो रहा है.

साहित्य, कला, संस्कृति आदि के क्षेत्र में निरंतर रचनशीलता, गतिशील समाज, संस्थाओं एवं संगठनों का सूचक है. भाषा का ज्ञान और अभिव्यक्ति की क्षमता एक दूसरे की पूरक हैं.

इस विशेषांक में हम आपको नांदेड मंडल की अद्वितीय यात्रा पर ले जाएंगे. इसमें हम आपको विभिन्न स्थलों, अनुभवों और जानकारी से अवगत कराएंगे. इस यात्रा में हमारे साथ जुड़ें और नांदेड मंडल के अद्भुत पर्यटन स्थलों का आनंद लें.

हम सब को आज के इस भाग-दौड़ के माहौल में पर्यटन के लिए जाना तो संभव नहीं है, लेकिन हमारा यह प्रयास है कि आप इसे पढ़कर ही यह अनुभूति करें कि वास्तव में आप पर्यटन पर गए हों और आप अपना रूटीन कार्य द्विगुणित उत्साह और नयी उमंग के साथ कर सकें.

आशा है आपको हमारा यह प्रयास पसंद आएगा. इसके बारे में आप अपने विचारों से हमें लाभान्वित करने का कष्ट करें. हमारा यह प्रयास निरंतर जारी रहेगा.

शुभकामनाओं सहित,

हेमंत वाडेकर,  
राजभाषा अधिकारी/नांदेड

## \*\*\* पर्यटन का महत्व \*\*\*

प्रिय साथियों,

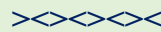
हम एक स्थान पर रहते-रहते और एक तरह का काम करते- करते ऊब जाते हैं. हमारी इच्छा होती है कि हम दूसरे स्थानों पर जाएँ और वहाँ घूम-फिरकर मनोरंजन करें. 'पर्यटन' का शाब्दिक अर्थ होता है-घूमना-फिरना, इधर-उधर भ्रमण करना, यात्रा करना. पर्यटन शिक्षा के लिए बहुत आवश्यक है .

पर्यटन से ज्ञान-प्राप्ति के साथ मनोरंजन की भी प्राप्ति होती है. मनोरंजन से शरीर और मन दोनों स्वस्थ रहते हैं. पर्यटन के समय व्यक्ति कुछ समय के लिए ही सही, घर-परिवार की चिंताओं से मुक्त होकर आत्मिक विकास के शुभ अवसर प्राप्त करते हैं. हम विभिन्न जातियों, वर्णों, संस्कृतियों और सभ्यताओं के प्रत्यक्ष संपर्क में आते हैं. पर्यटन से देश की प्रगति में निम्नप्रकार के लाभ है.

1. आर्थिक संवृद्धि:- पर्यटन से स्थानीय और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है.
2. रोजगार सृजन:- पर्यटन से स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के नए अवसर उत्पन्न होते हैं.
3. संस्कृति विनिमय:- पर्यटक विभिन्न संस्कृतियों के बारे में जानने का अवसर प्रदान करते हैं .
4. स्थानीय व्यवसायों को समर्थन:- स्थानीय व्यवसाय जैसे होटल, रेस्टोरेंट, दुकानों आदि को पर्यटन से लाभ मिलता है.
5. अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में सुधार:- पर्यटन से विभिन्न देशों के बीच समझ और आपसी सहयोग में सुधार होता है.
6. स्थानीय कला और हस्तशिल्प को प्रोत्साहन : - पर्यटन से स्थानीय कला और हस्तशिल्प को प्रोत्साहन मिलता है और उन्हें वैश्विक पहचान मिलती है.
7. पर्यावरण जागरूकता:-पर्यटकों के माध्यम से पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति जागरूकता बढ़ती है.
8. व्यक्तिगत विकास:- पर्यटन से व्यक्ति नई चीजें सीखते हैं, दृष्टिकोण बदलता है और अनुभव समृद्ध होता है.

किंतु हम सभी रेलकर्मियों के लिए इस अनुभव का आनंद लेना संभव नहीं होता .

इस समस्या के समाधान के लिए इस ई- पत्रिका के माध्यम से आपको नांदेड मंडल पर स्थित पौराणिक, ऐतिहासिक एवं पर्यटन स्थलों की सैर कराने का प्रयत्न किया जा रहा है किंतु समय मिलने पर इन स्थलों पर आप अवश्य जाएं और वास्तविक आनंद लें.



## नांदेड मंडल का संक्षिप्त इतिहास

रेलवे बोर्ड ने मार्च 1985 में दक्षिण मध्य रेलवे पर नांदेड को मुख्यालय बनाते हुए निर्णय लिया. नांदेड मंडल, दक्षिण मध्य रेलवे के हैदराबाद मंडल से विभाजन के बाद दिनांक 01.04.2003 को पूर्णतः अस्तित्व में आया. भौगोलिक तौर पर नांदेड मंडल प्रमुख रूप से महाराष्ट्र के मराठवाडा क्षेत्र, तेलंगाना के अदिलाबाद जिले का कुछ भाग तथा मध्यप्रदेश के खंडवा जिले तक फैला हुआ है. इस मंडल के आय का मुख्य स्रोत यात्री-यातायात है.



अकोला-खंडवा सेक्शन पर गेज परिवर्तन का कार्य चल रहा है.

## नांदेड मंडल में स्थित पर्यटन स्थल

नांदेड महाराष्ट्र राज्य का एक महत्वपूर्ण शहर है, जो ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक रूप से काफी प्रसिद्ध है. दक्षिण मध्य रेलवे के नांदेड मंडल का मंडल कार्यालय नांदेड में स्थित है, जो हवाई अड्डे के समीप है. गोदावरी नदी के तट पर स्थित यह शहर महाराष्ट्र के ऐतिहासिक स्थानों में भी गिना जाता है. माना जाता है कि प्राचीन समय में यहां नंद राजवंश का शासन था और बाद में नांदेड, सम्राट अशोक के अंतर्गत मौर्य साम्राज्य का हिस्सा बना. नांदेड शहर का प्राचीन नाम नंदीग्राम था. महाराष्ट्र सरकार ने इस शहर को 'पवित्र शहर' घोषित किया है.

हजूर साहिब नांदेड, गोदावरी नदी के तट पर बसा रमणीय शहर है. नांदेड सिख धर्म के अनुयायियों का एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल भी है जहां सिखों की पुण्यभूमि के 5 तखतों में नांदेड स्थित गुरुद्वारा भी एक तखत है जो सचखंड गुरुद्वारा के नाम से प्रसिद्ध है.

नांदेड शहर वायु, सड़क और रेल मार्ग से देश के प्रमुख शहरों से जुड़ा हुआ है. गुरु गोबिंद सिंह हवाई अड्डे से कई शहरों के लिए सीधी विमान सेवा भी उपलब्ध है.

# नांदेड शहर में स्थित गुरुद्वारे

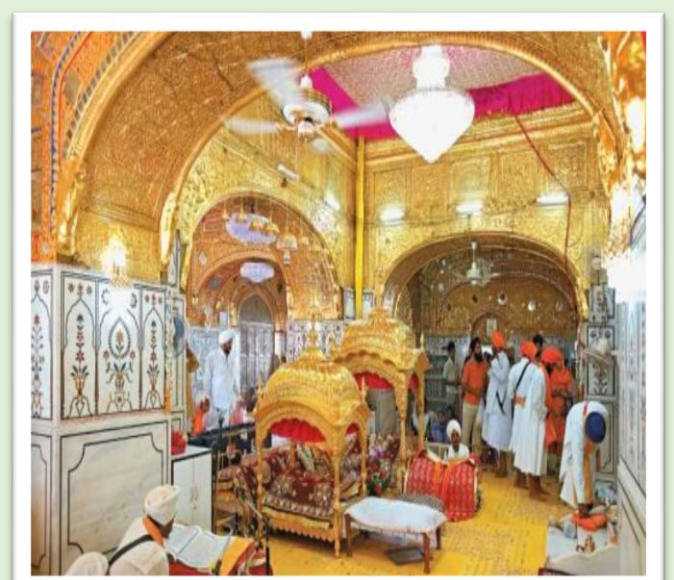
## 1. तखत सचखंड श्री हज़ूर अबचलनगर साहिब :

सिखों के दसवें गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंह का जन्म 22 दिसंबर, 1666 में पटना, बिहार में हुआ, आपके पिता श्री गुरु तेग बहादुर और माता श्रीमती गुजरी जी थी, आपकी रचनाएं पंजाबी, हिंदी, ब्रज, संस्कृत अरबी और फारसी भाषाओं में लिखी हुई है जिनका वर्णन दशम ग्रंथ साहिब में दर्ज है. दसवें गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंह ने नांदेड में ही अंतिम सांस ली और इसी स्थान पर गुरुद्वारा बनाया गया है.

अपनी मृत्यु को समीप देखकर गुरु गोबिंद सिंहजी ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में किसी अन्य को गुरु चुनने के बजाय यह घोषणा की

कि मेरे बाद आप सभी सिखों के पवित्र ग्रंथ को ही गुरु मानें और तभी से पवित्र ग्रन्थ को "गुरु ग्रन्थ साहिब" कहा जाने लगा.

गुरु गोबिंद सिंह के 2 धनुष, 35 बाण और 5 तलवारों को इस गुरुद्वारे में सुंदर पत्थरों से सहेज कर सुरक्षित रखा गया है.



## 2. गुरुद्वारा लंगर साहिब :

यह स्थान डेरा संत बाबा निधान सिंह जी के नाम से प्रसिद्ध है. यह गुरुद्वारा सचखंड साहिब जी से थोड़ी दूरी पर गोदावरी नदी के किनारे नगीना

घाट के समीप है. श्री गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज के समय से ही इस स्थान का सिख जगत में ऐतिहासिक महत्व है. यह वह प्राचीन स्थान है

जहां श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के नांदेड यात्रा के समय सिख फौज के लिए लंगर तैयार होता था तथा उनमें वितरित किया जाता था. यहां पर आज भी रोजाना हजारों की संख्या में श्रद्धालु

लंगर का प्रसाद ग्रहण करते हैं. लंगर भी 24 घंटे निर्बाध चलता है. यहां से यात्रियों को लंगर सफर के लिए भी साथ दिया जाता है.



### 3. गुरुद्वारा नगीना घाट और गुरुद्वारा बंदा घाट

ये दोनों गुरुद्वारे गोदावरी नदी के किनारे स्थित है. इस गुरुद्वारे का निर्माण दिल्ली के राजा गुलाब सिंह सेठी ने आरंभ किया लेकिन उनके निधन के बाद उनकी पत्नी ने इसे पूरा किया. इस गुरुद्वारे में "गुरु ग्रंथ साहिब" को संगमरमर से बनी पालकी में रखा गया है.



### 4. गुरुद्वारा मालटेकडी साहिब :

गुरुद्वारा मालटेकडी, तखत सचखंड से 2 कि.मी. की दूरी पर है . श्री गुरु गोबिंद सिंह जब नांदेड आए तब आरंभ में संगत साहिब में ही अपना डेरा डाला, पंजाब से गुरुजी के साथ आयी फौज ने गुरुजी से वेतन की मांग की तब गुरुजी ने माल टेकडी साहिब से धन मंगवाकर फौज में बांटा. गुरुद्वारा मालटेकडी साहिब को पहले चकरी माल और मालटीला भी कहा जाता है.



### 5. गुरुद्वारा शिकार घाट :

तखत सचखंड से 6 कि.मी. दूर गोदावरी नदी के तट पर गुरुद्वारा शिकार घाट है। इस गुरुद्वारे की सुंदर संगमरमरी इमारत ऐतिहासिक स्मृतियां अपने में समाए हुए है। इस गुरुद्वारे के बारे में यह मान्यता है कि इस स्थान पर गुरु गोबिंद सिंह जी ने एक खरगोश को मार कर उसे मुक्ति दी थी। ऐसा माना जाता है कि यह खरगोश सियाल कोट के भाई मौला करार थे, जो गुरु नानक देव जी के साथी थे, और वे हमेशा उनके साथ जाया करते थे। एक बार उन्होंने गुरु नानक जी के साथ जाने से मना कर दिया और एक जगह छुप गए। वहां उन्हें सांप ने डस लिया तब से वे खरगोश बनकर मुक्ति की तलाश में थे।



### 6. गुरुद्वारा माता साहिब :

यह गुरुद्वारा शिकार घाट और हीरा घाट के बीच में स्थित है। रोहतास निवासी भाई राम खत्री की पुत्री, माता साहिब का विवाह गुरु कलगीवर के साथ सन् 1757 में हुआ और गुरु ने खालसा की माता होने का मान दिया। दशमेश पिता के नांदेड में रहने पर माता इस स्थान पर तपस्या करती थी। आपका यह नियम था कि वे हमेशा पति के दर्शन करके ही भोजन ग्रहण करती थी। गुरुजी भी शिकार के बाद यहीं पहुंचकर खाना खाते थे। गुरुद्वारे में लंगर की प्रथा भी उसी समय से चली आ रही है।



### अष्टम अनुसूची

(अनुच्छेद 344(1) और 351) भाषाएं

- |            |            |             |            |             |
|------------|------------|-------------|------------|-------------|
| 1. असमिया  | 2. उडिया   | 3. उर्दू    | 4. कन्नड़  | 5. कश्मीरी  |
| 6. कोकणी   | 7. गुजराती | 8. डोगरी    | 9. तमिल    | 10. तेलुगू  |
| 11. नेपाली | 12. पंजाबी | 13. बांग्ला | 14. बोडो   | 15. मणिपुरी |
| 16. मराठी  | 17. मलयालम | 18. मैथिली  | 19. संथाली | 20. संस्कृत |
| 21. सिंधी  | 22. हिंदी  |             |            |             |

## 7. गुरुद्वारा हीराघाट :-

औरंगजेब के पुत्र राजा बहादुर शाह ने गुरु को एक कीमती हीरा भेंट किया, जिसे गुरु जी ने गोदावरी नदी में फेंक दिया. बहादुर शाह को बड़ी हैरानी हुई. गुरु जी ने कहा कि जरा गोदावरी नदी के प्रवाह की ओर देखो, जब बादशाह ने नदी में झांककर देखा, तो नदी में एक नहीं बल्कि कई कीमती हीरे दिखाई दिए. यह देखकर बादशाह का अहंकार टूट गया और उनका मन, गुरु जी के प्रति श्रद्धा से भर उठा. यह गुरुद्वारा शिकार घाट से 2 कि.मी. की दूरी पर स्थित है.



## 8. गुरुद्वारा नानक सर साहिब

गुरुद्वारा नानक सर साहिब, तख्त सचखंड श्री हजूर अचल नगर साहिब, नांदेड़ के दक्षिण पश्चिम में 10 किमी दूर स्थित है. श्री गुरु नानक देव जी बीदर के रास्ते में यहीं रुके थे. एक बेर का पेड़ है जहां गुरु जी नौ दिन नौ घंटे तक भक्ति में बैठे रहे.

एक दिन उनके साथी भाई मरदाना जी ने पूछा, 'ओह! महाराज, मुझे बहुत प्यास लगी है. मुझे पानी चाहिए. जवाब में गुरु जी ने उन्हें रबाब (एक तार वाला वाद्य) लेने और "करतार का धुन" (सर्वशक्तिमान भगवान की धुन) बजाने का आदेश दिया.



गुरु नानक के आदेश का पालन करते हुए भाई मरदाना जी ने रबाब बजाना शुरू कर दिया. अचानक एक शीतल और मीठे पानी का झरना दिखाई दिया. गुरु जी ने पानी के प्रकट होने का रहस्य बताया, "यह पवित्र भूमि भगवान की है, इसलिए पानी इतना ठंडा और मीठा है".

## हिंदी प्रवीणता प्राप्त कर्मचारियों की परिभाषा

यदि किसी कर्मचारी ने :-

मैट्रिक परीक्षा या उसके समतुल्य कोई परीक्षा हिंदी माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है या स्नातक परीक्षा या उसके समतुल्य कोई परीक्षा अथवा उसके उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिंदी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया था.

### 9.गुरुद्वारा श्री रतनगढ़ साहिब :

गुरुद्वारा श्री रतनगढ़ साहिब जिला नांदेड़, महाराष्ट्र में स्थित है. यह श्री सचखंड साहिब से दक्षिण की ओर लगभग 13 किलोमीटर की दूरी पर रत्नागिरी की पहाड़ियों पर स्थित है. जब श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपना शरीर छोड़ा, तो उनके खालसा बहुत परेशान थे. वे एक गहरे दुख में थे और अपने आप को उद्देश्यहीन महसूस कर रहे थे. कुछ समय बाद गुरु साहिब ने अपने घोड़े और बाज के साथ यहाँ रहने वाले एक संत के सामने प्रकट हुए.



गुरु साहिब ने संत से सचखंड जाने और खालसा को अपना संदेश देने के लिए कहा कि चिंता मत करो, मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूंगा. उन्होंने संदेश में कीर्तन और सतनाम के जाप के लिए खालसा को सलाह भी दी. गुरु साहिब के कहने पर संत सचखंड गए और खालसा को अपना संदेश दिया.

### कालेश्वर मंदिर, नांदेड़ :

भगवान शंकर का प्रसिद्ध मंदिर गोदावरी नदी के तट पर स्थित है. इस मंदिर के निकट ही विष्णुपुरी बांध का निर्माण किया गया है. मंदिर के दर्शन के बाद आप इस मंदिर के निकट गोदावरी नदी पर निर्मित विष्णुपुरी बांध व

शंकर सागर जलाशय के लिए संचित किए गए जल में "नौकायान" का भी आनंद उठा सकते हैं. यह काफी प्राचीन मंदिर है. यहां वर्ष भर विशेषकर श्रावण माह में श्रद्धालुओं का आना-जाना लगा रहता है.



### विष्णुपुरी बांध:

यह गोदावरी नदी पर स्थित एक बड़ी सिंचाई परियोजना है। इसका जल नांदेड़ शहर के लिए पीने के पानी की आवश्यकता को पूरा करता है। इस परियोजना की कल्पना महाराष्ट्र के पूर्व

मुख्यमंत्री स्वर्गीय श्री. शंकर राव चव्हाण ने की थी। इसलिए उनकी याद में महाराष्ट्र सरकार ने जलाशय का नाम “शंकर सागर जलाशय” रखा है।



### कंधार का किला :

नांदेड़ शहर से लगभग 40 कि.मी. की दूरी पर कंधार शहर स्थित है। यह शहर अपने आप में न केवल ऐतिहासिक महत्व रखता है, बल्कि एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल भी है।

निर्माण राष्ट्रकूट राजा कृष्ण-III ने करवाया



नांदेड़ की प्राचीन विरासत में कंधार के किले का ऐतिहासिक महत्व है। इसकी वास्तुकला मनमोहक है तथा पर्यटकों के लिए इसमें फव्वारे के साथ जलाशय भी बनाया गया है। इस किले का

था। इसकी संरचनाओं में अंबर खाना और शीशमहल आकर्षण का केंद्र है। इसका अधिकांश भाग जीर्ण-शीर्ष अवस्था में है।

### हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान

यदि कोई कर्मचारी यह घोषणा करता है कि वह मैट्रिक या उसके समतुल्य कोई परीक्षा हिंदी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है तो राजभाषा उपबंधों के अनुरूप उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसे हिंदी का कार्य साधक ज्ञान है।

### हजरत सरवरे मगदूम सय्यद दरगाह – कंधार, नांदेड़ :

कंधार के ऐतिहासिक किले के पास ही हजरत सरवरे मगदूम सय्या साहब की प्रसिद्ध दरगाह है। इस दरगाह में सर्वधर्म श्रद्धालु बड़ी आस्था से आते हैं। मान्यता है कि यहां मांगी जानेवाली मन्नत पूरी होती है।



### सहस्रकुंड जल-प्रपात :

सहस्रकुंड रेलवे स्टेशन से लगभग 4 कि.मी. की दूरी पर नांदेड़ और यवतमाल जिले की सीमाओं के पास सहस्रकुंड जलप्रपात है, जो पेनगंगा नदी पर स्थित है। एक बड़े पत्थर की वजह से नदी का प्रवाह दो भागों में बंट जाता है और महाराष्ट्र राज्य के विदर्भ क्षेत्र व मराठवाड़ा क्षेत्र को विभाजित करता है।

यह नयनाभिराम जल-प्रपात, लगभग 30-40 फुट ऊंचा है इस जलप्रपात का दृश्य वर्षा ऋतु में सुंदरता की पराकाष्ठा को छू लेता है। इसे अधिक विकसित और पर्यटन की दृष्टि से उन्नत किया जाए तो निश्चय ही इसे पर्यटकों के लिए एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल बनाया जा सकता है।



### हिंदी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग

राजभाषा अधिनियम-1963 की धारा-3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करनेवाले अधिकारियों/व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसे दस्तावेज हिंदी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार किए जाते हैं, निष्पादित किए जाते हैं और जारी किए जाते हैं-

### माहुर : रेणुका माता शक्ति पीठ :

किनवट के निकट माहुर नामक जगह पर एक पवित्र धार्मिक स्थल ‘रेणुका देवी’ का प्रसिद्ध मंदिर है. देश के 18 शक्ति पीठों में यह भी एक शक्ति पीठ है. पहाड़ी पर स्थित रेणुका माता मंदिर प्राचीनतम है इस मंदिर से थोड़ी दूरी पर उनकेश्वर नामक स्थान है जो गर्म पानी के कुंड के लिए जाना जाता है. ऐसा माना जाता है कि इस कुंड के पानी में औषधीय गुण पाए जाते हैं, जो त्वचा संबंधी रोगों के लिए लाभकारी है.



### औरंगाबाद शहर के पर्यटन स्थल

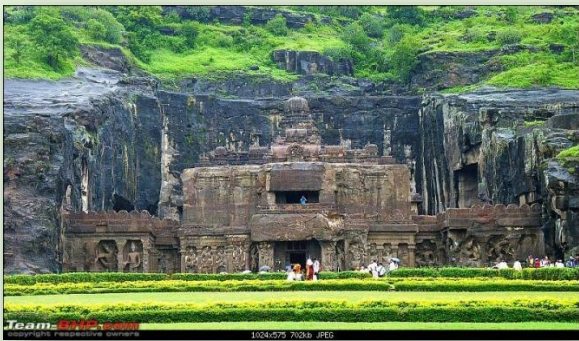
औरंगाबाद, महाराष्ट्र राज्य का एक प्रसिद्ध शहर और पर्यटन स्थल है. महाराष्ट्र सरकार ने वर्ष 2010 में औरंगाबाद शहर को महाराष्ट्र की “पर्यटन राजधानी” के रूप में घोषित किया. यह शहर अपने कई आकर्षक दर्शनीय स्थलों से पर्यटकों को आकर्षित करता है. औरंगाबाद अपने ऐतिहासिक स्थल अजंता-एलोरा और औरंगाबाद की गुफाओं और दौलताबाद किले के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध

हैं. औरंगाबाद के अन्य आकर्षक स्थलों में बीबी का मकबरा, पनचक्की, ज्योतिर्लिंग घृणेश्वर मंदिर, भद्रा मारुति मंदिर, डॉ. अंबेडकर मराठवाड़ा विद्यापीठ और सिद्धार्थ गार्डन व चिड़ियाघर के नाम भी शामिल हैं. औरंगाबाद शहर वायु, सड़क और रेल मार्ग से देश के प्रमुख शहरों से जुड़ा हुआ है. औरंगाबाद हवाई अड्डे से कई शहरों के लिए सीधी विमान सेवा उपलब्ध है.



### एलोरा गुफाएँ :

एलोरा की गुफाएँ औरंगाबाद के उत्तर-पश्चिम में लगभग 29 कि.मी. की दूरी पर और मुंबई से लगभग 300 कि.मी. की दूरी पर स्थित हैं। इन मंदिरों की श्रृंखलाबद्ध रचना पर्वतमाला को काटकर की गई है। जिसमें बौद्ध धर्म, हिंदू धर्म और जैन धर्म से संबंधित कलाकृतियां देखने को मिलती है। पत्थरों पर ही इन्हें उकेरा गया है।



यहां की गुफा सं.16 की अलग विशेषता है और यह दुनिया भर में सबसे बड़ी एकल अखंड शिला पर बने कैलाश मंदिर जो शिव को समर्पित एक रथ के आकार के स्मारक के लिए जानी जाती है। एलोरा गुफा में कैलाश मंदिर की खुदाई में वैष्णववाद, शक्तिवाद के अलावा दो प्रमुख हिंदू महाकाव्यों के सारांश से युक्त देवी, देवताओं और पौराणिक कथाओं को प्रदर्शित करनेवाली अद्वितीय मूर्तियां हैं।



### अजंता की गुफाएँ

अजंता की गुफाएँ औरंगाबाद के उत्तर में 107 कि.मी. की दूरी पर स्थित हैं। अजंता की गुफाओं को वर्ष 1983 में यूनेस्को ने 'विश्व विरासत स्थल' की सूची में शामिल किया था। ये गुफाएँ अपनी भित्ति-चित्रकला के लिए प्रसिद्ध हैं। अजंता की गुफाएँ घोड़े की नाल के आकार वाली एक चट्टान की सतह पर उकेरी गई हैं।

गुफाओं का विकास 200 ई.पू. से 650 ई.पू.के मध्य हुआ। इन गुफाओं में बने चित्र चावल के मांड, गोंद और अन्य कुछ पत्तियों तथा वस्तुओं का सम्मिश्रण कर परिष्कृत किए गए रंगों से बनाए गए हैं। इनका रंग हल्का या खराब नहीं हुआ है और आज भी इनकी चमक यथावत बनी हुई है।

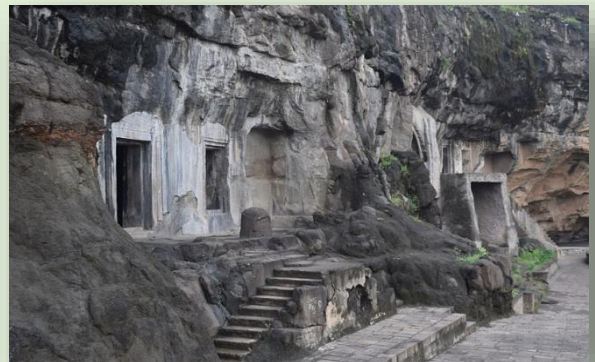
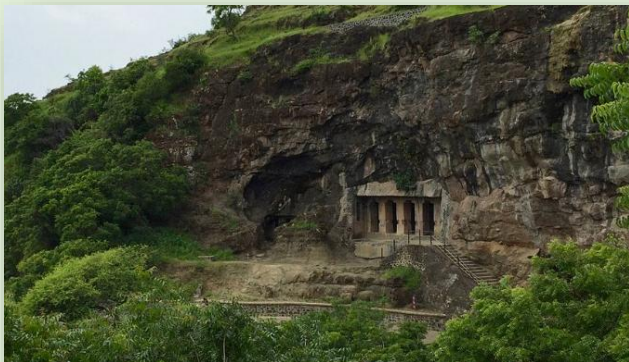


### औरंगाबाद गुफाएं :

औरंगाबाद की गुफाओं में बारह पत्थरों को काटकर और तराशकर बौद्ध की प्रतिमाओं की नक्काशी और उत्कीर्णन किया गया है. इनका निर्माण पहाडीनुमा बारह पत्थरों पर किया गया है जो पूर्व से पश्चिम की ओर फैले हुए हैं.

औरंगाबाद गुफाओं की नक्काशी हीनयान शैली के स्तूप और महायान शैली के कलात्मक कार्यों को शामिल करने के लिए

उल्लेखनीय है. ये गुफाएं भारत की उन गुफाओं में से एक है जिसमें तंत्र परंपरा के अनुसार कई बौद्ध देवताओं को उकेरा गया है. यद्यपि इन मूर्तियों की तुलना अजंता और एलोरा से की जा सकती है, लेकिन ये गुफाएं बहुत छोटी हैं. ऐसा माना जाता है कि इन गुफाओं का निर्माण 6वीं और 7 वीं शताब्दी में किया गया था.

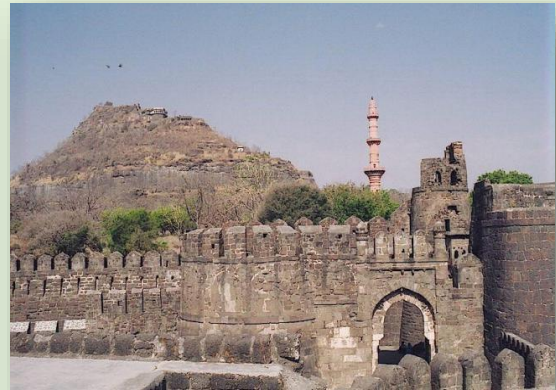


### दौलताबाद किला :

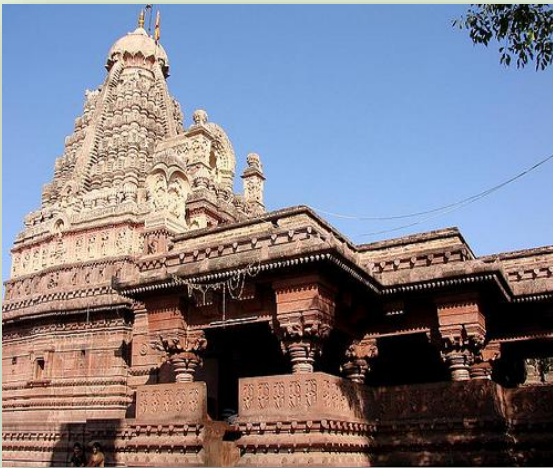
दौलताबाद किला औरंगाबाद के मुख्य शहर से लगभग 17 कि.मी. की दूरी पर स्थित एक प्राचीन संरचना है, जिसके चारों ओर दूर-दूर तक हरियाली फैली है. दौलताबाद के किले को 'महाराष्ट्र के सात अजूबों' में से एक के रूप में जाना जाता है, जिसका निर्माण 12वीं शताब्दी के दौरान किया गया था.



यह किला देवगिरी किले के रूप में भी जाना जाता है, यह किला अपने ऐतिहासिक स्वरूप के कारण पर्यटकों को मंत्रमुग्ध कर देता है. पर्यटकों को इस किले तक पहुंचने के लिए लगभग 750 सीढ़ियां चढ़कर जाना होता है. ऊपर से देखने पर नीचे का दृश्य बहुत ही शानदार नजर आता है.



### घृणेश्वर मंदिर :



यह एक प्रमुख मंदिर है जो भगवान शिव के 12 पवित्र ज्योर्तिलिंगों में से एक के रूप में जाना जाता है. घृणेश्वर मन्दिर वेलूर गांव में स्थित 13वीं शताब्दी का शिव मंदिर है, जो यूनेस्को के विश्व धरोहर स्थलों की सूची में शामिल है. इस मंदिर का उल्लेख शिव पुराण में किया गया है.

### पनचक्की:

पनचक्की यानि पानी से चलने वाली चक्की. यह पनचक्की महाराष्ट्र राज्य के औरंगाबाद शहर में स्थित है. मध्यकाल की यह एक अब्दुत विरासत है इसमें उस समय के वैज्ञानिक विचारों की झलक मिलती है. पहाड़ के झरने से गिरनेवाले पानी से निर्मित ऊर्जा से चलने वाली यह पनचक्की, बाबा शाह हज़रत मुसाफिर की दरगाह से जुड़ी हुई है और इस

पनचक्की के द्वारा दरगाह पर आने वाले सूफी-संतो और कारिदों की रोटी के लिए आटा पीसा जाता था.

पनचक्की में कई महत्वपूर्ण पुस्तकों और पांडुलिपियों को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से पुस्तकालय खोला गया है. इस पुस्तकालय में स्वतंत्रता संग्राम के समय से लेकर अब तक की लगभग 1,00,000 पुस्तकों का संग्रह है.



**भद्रा मारुति मंदिर:** औरंगाबाद शहर के पास भद्रा मारुति प्रसिद्ध मंदिर है, जो भगवान हनुमान को समर्पित है. यह मंदिर भारत के उन तीन मंदिरों में से एक है जहाँ भगवान हनुमान की मूर्ति को शयन मुद्रा में देखा जा सकता है. इसके अलावा अन्य दो मूर्तियां उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में हैं. यह पवित्र मंदिर एलोरा गुफाओं से सिर्फ 4 कि.मी.की दूरी पर स्थित है.



## लोनार जलाशय :

लोनार झील का निर्माण उल्कापिंड (meteorite) के प्रभाव के कारण प्राकृतिक रूप से हुआ है और यह दुनिया की सबसे बड़ी खारे पानी की झीलों में तीसरे स्थान पर है. क्रेटर का मतलब है प्राकृतिक रूप से बनी विशाल और गहरी खारे पानी की झील. इसकी खोज 1823 में एक ब्रिटिश अधिकारी जे.ई. अलेक्जेंडर ने की थी.

लोनार क्रेटर दुनिया में अपनी तरह का एकमात्र क्रेटर है जो बेसाल्टिक चट्टान से बना है. झील का पानी समुद्र के पानी से 7 गुना अधिक खारा है .

लोनार झील महाराष्ट्र के बुलढाणा जिले में लोनार गांव की सीमा पर स्थित है, जो बुलढाना शहर से 90 किलोमीटर दूर है.

लोनार झील के लिए हवाई मार्ग, रेलवे और सड़क मार्ग से आसानी से पहुँचा जा सकता है, निकटतम हवाई अड्डा औरंगाबाद है जो 141 किलोमीटर की दूरी पर है और नांदेड मंडल पर निकटतम रेलवे स्टेशन जालना और सेलू हैं जहां से इसकी दूरी क्रमशः 90 कि.मी. और 70 कि.मी. है. बुलढाना,

औरंगाबाद, जालना तथा सेलू आदि शहरों से सड़क मार्ग से आसानी से यहां पहुंचा जा सकता है.



प्राप्त दस्तावेजों के आधार पर ऐसा कहा जाता है कि लगभग 50,000 साल पहले एक उल्कापिंड (meteorite) पृथ्वी से टकराया था. इस उल्कापिंड से ही झील का निर्माण हुआ. यह झील 150 मीटर गहरी और इसका व्यास 1830 मीटर है.

लोनार क्रेटर का आकार लगभग पूर्णतः गोलाकार है, जिसकी परिधि 6 किलोमीटर है .

## शिरडी:

शिरडी, महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के राहता तहसील के अंतर्गत आता है. यहां साई बाबा का एक विशाल मंदिर है, जो साई बाबा समाधि मंदिर के रूप में प्रसिद्ध है. इसे साई नगर शिरडी भी कहते हैं. यहां बड़ी संख्या में भक्तगण दर्शन के लिए पहुंचते हैं. यहां पहुंचने के लिए इस मंडल का नागरसोल निकटतम रेलवे स्टेशन है. नागरसोल दक्षिण मध्य रेलवे के क्षेत्राधिकार का अंतिम स्टेशन है, जो शिरडी साई बाबा मंदिर जाने के लिए निकटतम रेलवे स्टेशन है. प्रसिद्ध तीर्थ स्थल होने की वजह से देश के विभिन्न भागों के लिए रेल सेवा उपलब्ध है.



नांदेड़ मंडल का एक महत्वपूर्ण स्टेशन हिंगोली है। इस जिले से चार नदियां पूर्णा, पेनगंगा, कयाधु और केनाड़ बहती हैं। पूर्णा नदी पर एलदरी और सिद्धेश्वरी बांध हैं। प्रसिद्ध संत नामदेव का जन्म इस जिले के नरसी गांव में हुआ था तब से इस गांव का नाम नरसी नामदेव पड़ा।

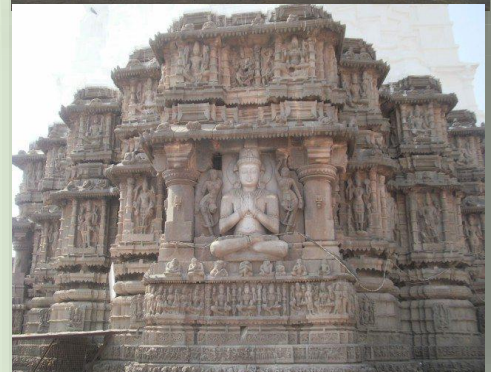
### नरसी नामदेव :

यह जगह वारकरी संत और भक्ति

गीतों के रचयिता कवि नामदेव का जन्मस्थान है। संत नामदेव की स्मृति में एक मंदिर बनाया गया है जो “संत नामदेव संस्था नरसी” के रूप में प्रसिद्ध है। इस मंदिर में हिंदू और सिख दोनों धर्म के अनुयायी आते हैं। यहां पर वार्षिक मेला भी लगता है। महाराष्ट्र सरकार ने इस क्षेत्र को पवित्र धार्मिक क्षेत्र घोषित किया है। इस जगह को पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित किया जा रहा है

### औंढा नागनाथ:

औंढा नागनाथ, महाराष्ट्र के मराठवाड़ा क्षेत्र में स्थित हिंगोली जिले के औंढा नामक तालुका (तहसील) में स्थित है तथा यह एक अति प्राचीन तथा सुन्दर मंदिर है, जो भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है। इस स्थान का महात्म्य प्राचीन धर्म ग्रंथों तथा पुराणों में भी मिलता है। इस मंदिर का शिल्प बड़ा अनोखा तथा अनूठा है, मंदिर का निर्माण कार्य महाभारत कालीन माना जाता है। पत्थरों से बना यह विशाल मंदिर हेमाड पंथी स्थापत्य कला पर आधारित है तथा करीब 60 हजार वर्गफुट के क्षेत्र में फैला है। मंदिर की चारों दीवारें काफी मजबूती से बनाई गई हैं तथा इसके गलियारे भी भव्य व विशाल हैं। सभा मंडप आठ खम्भों पर आधारित है तथा इसका आकार गोल है।



## नांदेड़ मंडल द्वारा आयोजित गतिविधियों की झलकियां

दिनांक 26 जनवरी 2025 को आयोजित गणतंत्र दिवस समारोह के दृश्य



दिनांक 05 फरवरी 2025 को महाप्रबंधक का अकोला स्टेशन का निरीक्षण



## दिनांक 16.01.2025 औरंगाबाद स्टेशन पर संरक्षा सेमिनार का आयोजन



## राजभाषा संगठन/नांदेड़ द्वारा संचालित गतिविधियों की झलकियां

1. दिनांक 09.01.2025 को अकोला स्टेशन पर हिंदी तकनीकी सेमिनार का आयोजन किया गया.



2 . दिनांक 30.01.2025 को औरंगाबाद स्टेशन पर “जयशंकर प्रसाद” जी की जयंती एवं हिंदी सेमिनार का आयोजन किया गया



### 3. दिनांक – 21.02.2025 को पूर्णा स्टेशन पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया.



#### मां पर एक कविता - ओ माई

अम्बर की ये ऊंचाई, धरती की ये गहराई  
तेरे मन मे है समाई ओ माई...  
तेरा मन अमृत का प्याला, यही काबा यही शिवाला  
तेरी ममता जीवनदायी ओ माई..  
जी चाहे क्यों तेरे साथ रहूँ बनके तेरा हमजोली  
तेरे हाथ ना आउ यूँ छुप जाऊ यूँ खेलु आँख मिचोली...  
परियो की कहानी सुनके, कोई मीठी लोरी सुनाके  
करदे सपने सुखदायी ओ माई..  
संसार के ताने बाने से घबराता है मन मेरा  
इन झूठे रिश्ते नातो मे बस प्यार है सच्चा तेरा..  
सब दुख सुख में ढल जाए तेरी बाहें जो मिल जाए  
मिल जाए मुझको खुदाई ओ माई...  
जाड़े की ठंडी रातो में जब देर से मैं घर आऊ  
हल्की सी दस्तक पे अपनी तुझे जागता हुआ मैं पाऊ...  
सर्दी से ठीठुरती जाए ठंडा बिस्तर अपना  
मुझे दे के गर्म रज़ाई ओ माई..  
फिर कोई शरारत हो मुझसे नाराज़ करू फिर तुझको  
फिर गाल पे ठप्पी मार के तू सीने से लगा ले मुझको ..  
बचपन की प्यास बुझा दे अपने हाथो से खिलाके मिठाई  
ओ माई.. - ताहिर फ़राज़ रामपुरी

कविता सुनने के लिए यहां पर [क्लिक](#) करें